स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् महिला उपन्यासकारों का सामाजिक उत्थान में योगदान

छवि
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
वी0वी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शामली, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् महिला उपन्यासकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उन्होने अपने आत्मविश्वास एवं साहस के बल पर उपन्यास संसार में हरित क्रान्ति का संचार किया है। उनका साहित्य चिन्तन और जीवनानुभव एक साथ जुड़कर सामने आए हैं। तत्कालीन समय से रूबरू हो रही विचारोत्तेजक और प्रयोगधर्मी रचनाएँ महिला उपन्यासकारों की समाज को एक महत्वपूर्ण देन है। आभासीय दुनिया के इस युग में टी0वी0 धारावाहिकों की चुनौती का सामना करते हुए भी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास अपनी अद्वितीय पठनीयता के कारण सामाजिक संचेतना को चुम्बकीय शक्ति से अपनी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् महिला कथाकारों की एक सशक्त परम्परा प्रवाहित होती नजर आती है। इन्होंने अपने समय के समाज

के प्रत्येक पहलू को अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से साहित्य में उकेरा है। देश विभाजन के पश्चात् निर्मित देश की सामाजिक स्थिति और उसके कारण धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर हुए परिवर्तनों को इन्होंने अपने साहित्य में उकेरा है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि इनका उद्देश्य केवल नारी के प्रति अपनी संवेदनाओं को प्रदर्शित करना मात्र नहीं है वरन् समाज में जागरूकता लाना भी है। महिला लेखन परम्परा में उभरकर सामने आई अनेक लेखिकाओं ने अनेकों आन्दोलनों से जुड़कर अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य को समृद्ध बनाया है। स्वतंत्रता के पश्चात् नारी लेखन में मुक्ति के स्वर उभरे उन्होंने अपने लेखन से उन सभी मान्यताओं को तोड़ा जिन्हे पुरूष ने उनके चारों और गढ़ा था। उसने अपने भीतर की छटपटाहट को अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति दी।

महिला उपन्यासकारों ने केवल स्त्री की अस्मिता पर ही नहीं बल्कि जीवन में आई नई नैतिकता पर भी अपनी लेखनी चलाई। जिससे स्पष्ट होता है कि महिला लेखन एक दृष्टि से सामाजिक सरोकारों में परिवर्तन का एक नया कदम है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक निरन्तर बदलते परिवेश को उसने अपने लेखन का विषय बनाया है। इन्होंने समाज की विडम्बनाओं, विषमताओं, विराधाभासों और विरोधों, अवरोधो को अपना विषय बनाया तथा दूसरे बदलते समय की नब्ज पर भी उन्होंने उँगली रखी।

भारतीय समाज पुरूष वर्चस्व का समाज है जिसमें स्त्रियों की स्थिति दोयम दर्जे की रही है किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी सशक्तिकरण के लिए प्रयास होने लगे और स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र

में अपने पांव मजबूती से जमाने लगी। फलस्वरूप महिलाओं की चेतना स्वतः जागृत हुई कि उनका उद्धार उनके ही हाथों सम्भव है। महिला उपन्यासकारों ने बड़ी तीक्ष्णता से अपनी वेदना और विचारधारा को साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख रखा।

स्वतंत्रता के पश्चात् नवीन आयामों को आधार बनाकर महिला लेखन का नेतृत्व 'रजनी पनिकर' ने किया। उन्होंने कुल 14 उपन्यास लिखे। इनका पहला उपन्यास 'ठोकर' मध्यवर्गीय पात्रों के स्वच्छन्दता प्रेम को प्रकट करता है। 'पानी की दीवार' नीना के दो पुरूषों के मध्य बँटे प्रेम भाव एवं दिलीप नायक की एकांतप्रिय व्यक्ति की मनोग्रन्थियों को प्रकट करता है। 'मोम के मोती' कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर आधारित है। 'प्यासे बादल' वर्ग वैषम्य को आधार बनाकर लिखा गया है। 'जाड़े की धूप' दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों को उजागर करता है। 'सोमाली दी' में एक उच्च परिवार की कथा द्वारा स्वावलम्बिता के लिए संघर्ष करती हुई नारी के संघर्ष की कथा को सुन्दरता से चित्रित किया गया है। इस प्रकार रजनी पनिकर ने नारी हृदय के मनोभावों को, उसकी प्रतिक्रियाओं की ओर सूक्ष्म दृष्टि को एक कुशल चित्रकार की भांति चित्रित किया है।

'कृष्णा सोबती' हिन्दी की सबसे अधिक चर्चित किन्तु विवादास्पद लेखिका हैं। विचारों से ही नहीं लेखन से भी बोल्ड कही जाने वाली लेखिका हैं। इनका पहला उपन्यास 'डार से बिछुडी' में नारी जीवन की विडम्बना को चित्रित किया गया है। यथा–''नानी ठीक ही कहती थी...सम्भल कर एक बार का थिरका पांव जिंदगी धूल में मिला देगा।''[2] इसी प्रकार इनका 'मित्रों मरजानी' शरीर की प्यास

से पीड़ित स्त्री की कथा है। नारी की यौवन भुभुक्षा को इतने स्पष्ट शब्दों में लिखने का साहस सम्भवतः पुरूष लेखक भी नहीं कर सकते। 'मंजुल भगत' का 'अनारो' एक निम्नवर्गीय महिला की वर्ग चेतना पर आधारित मान्यताओं, जीवनादर्शों और रूचियों को आधार बनाकर लिखा गया निम्न वर्गीय महिला पात्र को प्रस्तुत करने वाला पहला उपन्यास है। इनकी दृष्टि बोध, जिजीविषा, संघर्ष चेतना खास तरह की रही है। आत्मीयता और निश्चलता इनके लेखन में सर्वत्र दिखाई देती है। दीन–दुखियों, पिछड़े, दलितों, उत्पीडितों के साथ इनकी संवेदना गहराई से जुड़ी हुई है। क्रोध, आक्रोश, विद्रोह की जगह सहानुभूति, सहयोग, करूणा और क्षमा मूल स्वर है। मृदुला गर्ग के अनुसार– ''इनके लेखन और जीवन का मूल स्वर क्षमा था, पर वह क्षमाशीलता प्रेम से उपजी थी, न कि साधारण पुरूष प्रेम से। ''अतः उनकी दृष्टि व्यापक थी।

महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में आई विविधता ने सभी को विस्मित कर दिया है। स्त्री जीवन के अनेक कठिन प्रश्नों के साथ–साथ समय और समाज का कोई भी पक्ष इनकी लेखनी से अछूता नहीं रहा हैं, चाहे वह मनोविज्ञान हो, कूटनीति हो, राजनीति हो आदि। अनेकों विषयों को लेकर उन्होंने सामाजिक उत्थान में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया है। मन्नू भंडारी का ''आपका बंटी'' उपन्यास एक कालजयी उपन्यास है। इस उपन्यास में मुख्य रूप में एक बच्चे की निगाहों से घायल होती संवेदना का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है। जिससे मध्यवर्गीय परिवार के संबंध–विच्छेद की स्थिति एक बच्चे की दुनिया का भयावह दुःस्वप्न

बन जाती है। सभी एक–दूसरे से ऐसे उलझे हुए हैं कि पारिवारिक त्रासदी से उपजी स्थितियां सभी के लिए यातना बन जाती हैं। इनका 'महाभोज' राजनीतिक गंध पर आधारित उपन्यास है जो एक ओर तंत्र के 'शिकंजे को तो दूसरी ओर जन की नियति के द्वन्द्व की दारूण कथा है। इन्होंने जिंदगी की विद्रूपताओं, विषमताओं, विकृतियों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। अपने लेखन में इन्होने परम्परागत रूढिग्रस्त नैतिकता को नकारते हुए वैयक्तिक जीवन की कामवासना, यौन अतृप्ति कुंठा, रूग्णता, हीनताबोध आदि को उभारा है। नयी नारी दृष्टि से उपजी स्वच्छन्द व्यक्तित्व की चाह, आत्मनिर्भरता की इच्छा अहंभाव आदि के प्रति निरन्तर संघर्षशील रही है। इनके उपन्यासों ने नारी लेखन पर लगते रहे सीमित अनुभव क्षेत्र के आरोपों का खण्डन किया है। जहां स्त्री–पुरूष सम्बन्धों को पारिवारिक सामाजिक दायरों से आगे बढाकर राजनीतिक तथा मानवीय आधार तक ले जाने का प्रयास दृष्टिगत होता है वही इनकी रचनाओं में धार्मिक मान्यताओं की आंड़ में होने वाले कुकृत्यों, असामाजिक गतिविधियों, कठोर अनुशासनात्मक संस्कारों में पिसती नारी के जीवन की व्यथा का मार्मिक और यथार्थ चित्रण हुआ है।

'नासिरा शर्मा के उपन्यास जिन्दा मुहावरे' का मूल स्वर विभाजन की पीड़ा, असुरक्षा, दंगे, मजाहिर की विडम्बना, सम्बन्धो में समाई प्रतीक्षा यादों के तहखाने, स्वार्थी राजनीतिक अस्मिता का संघर्ष, धर्म, शिक्षा, संस्कृति, अर्थ जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न लिए गए हैं। उपन्यास की मूल संवेदना को वे दो पंक्तियों में ही ध्वनित कर देती हैं, ''बंटवारे में खानदान मुसलमानों के अधिक बंटे हैं। बंटवारें का

गम जितना मुसलमानों को है, उतना उनके दूसरे हम वतनों को कहां तक हो सकता है।'' इसमें मुस्लिम मध्य वर्ग की इच्छा–आकांक्षा, टूटन–घुटन को सियासत के चक्रव्यूह से चाक–चाक होते दिखाया गया है।

मृदुला गर्ग एक सशक्त लेखिका हैं सन् 1975 में प्रकाशित 'चितकोबरा' उपन्यास संभोग प्रसंग के खुले चित्रण के कारण काफी चर्चित रहा है। 'कठगुलाब' भी इसी परम्परा को आगे बढाने वाला चर्चित उपन्यास हैं।' वंशज में स्वतंत्रता संग्राम के स्वप्नों को और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री समस्या को रेखांकित किया गया है। उन्होंने, प्रेम, तलाक, दहेज, सेक्स आदि विषयों का खुला अंकन करके महिला लेखन को नया आयाम दिया। इन सभी के माध्यम से इन्होंने समाज का ध्यान इन सभी समस्याओं की ओर आकर्षित कर समाज के उत्थान में योगदान का कार्य किया है। ''मैत्रेयी पुष्पा के नारी पात्रों का स्वर यद्यपि विद्रोही रहा है। परन्तु उनकी इस प्रवृत्ति के पीछे उनके द्वारा पुरूष प्रधान समाज में भोगी हुई मानसिकता ही इसका परिणाम है। इस दृष्टि सें 'इदन्नमम्' उपन्यास में तीन पीढ़ियों की नारियाँ पुरूष प्रधान व्यवस्था की दुष्प्रवृत्तियों को भोगती हुई कुलटा बनती हैं तो 'चाक' की स्त्रियां इस यथार्थ का भोग करती है। 'झूला नट' की झीलों एक विशिष्ट नारी पात्र है जो तन की सुन्दरता से रहित होने के कारण पति के तिरस्कार उपेक्षा एवं अपमान की पीड़ा भोगती है, तो वही 'अल्मा कबूतरी' में कबूतरा जनजाती की अल्मा का जीवन यथार्थ मात्र पीड़ा भोगती हुई नारी का जीवन यथार्थ नही, पर वंचित समाज की नारी होने से दोहरी यातना भोगती

नारी का जीवन यथार्थ हैं।'' लेखक तभी कुछ श्रेष्ठ लिख सकता है जब वह भोगे हुए यथार्थ पर अपनी लेखनी को चलाता है। इस दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा जी ने दुःखद स्त्रियों के यथार्थ को समाज के सम्मुख रख उनको उन सभी यातनाओं से निकालने का कार्य अपने लेखन के माध्यम से कर समाजिक उत्थान मे योगदान किया है।

आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होने के कारण स्त्री के कार्य क्षेत्र ने विस्तार पा लिया है। अब वह इसके बल पर आन्तरिक और वाह्य रूप से हो रहे अत्याचारों एवं नरक से बाहर निकलने में समर्थ है। अपने पैरों पर खड़ी नारी का अनादर करना असम्भव है क्योंकि उसके पैरों तले की मजबूत नींव ने उसे निर्णय क्षमता प्रदान की है यदि वह निम्न वर्ग से है तो कारखानों में, घरों में नौकरानी बन कार्य कर सकती है। मध्य वर्ग से है तो दफ्तर, डॉक्टर, वकील, स्कूल, कॉलेज में कार्य कर अपने आत्मविश्वास को तो बढ़ा ही सकती है साथ ही समाज की अन्य स्त्रियों को भी स्वावलंबी बनाने में सहयोग कर रही है। यदि उच्चवर्गीय महिला है तो वह व्यवसाय कर देश–विदेश में घूम रही है। आज उसका कार्य ही उसका स्वामी है, इस प्रकार दैनिक कार्यो के साथ नित्य नए लोगों से मिलना उसके जीवन की परिधि के धरातल को बढा रहा है।

गरीबी, अकाल और भूख का चित्रण भी हम इनके उपन्यासों में देख सकते हैं। 'अपनी सलीबें' में संदर्भ दलित वर्ग का है तो 'कलिकथा वाया बाइपास' में यह 19वीं शती के अकालों से विश्वयुद्धों की देन गरीबी तक होती हुई स्वातंत्र्योत्तर काल पर पहुँच

सन् 2000 तक आई है। भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था घूसखोर अफसर भी इनके उपन्यासों का विषय रहे हैं।

स्वातंत्रयोत्तर काल मे महिला लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ। इन लेखिकाओं की लेखनी ने समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था आदि नवीन विषयों को भी अपने लेखन का माध्यम चुना है। उसने स्त्री को सीमित दायरे से निकालकर असीमित वैचारिक भूमि पर लाकर खड़ा कर दिया हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नारियों की लेखनी अपने सही परिप्रेक्ष्य में प्रकट हुई है। इनकी लेखनी पर प्रश्न चिह्न नहीं लगाये जा सकते। उनकी सामर्थ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। स्वतंत्रता के पश्चात्, हिंदी उपन्यास साहित्य प्रभा खेतान, मंजुल भगत, नासिरा शर्मा, मृणाल पांडे, कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, जैसी अनेकों लेखिकाओं की चर्चा किए बिना अधूरा ही प्रतीत होता है। श्रेष्ठ लेखन की शर्तों को महिला उपन्यास लेखिकाओं ने ईमानदारी से पूर्ण कर सामाजिक उत्थान को बल प्रदान किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 कमल कुमारी जोहरी, हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास–पृ0–39*
2. *कृष्णा सोबती डार से बिछुडी (भूमिका) आवरण पृष्ठ।*
3. *मंजुल भगत–अनारो*
4. *मन्नू भंडारी–आपका बंटी*
5. *मन्नू भंडारी–महाभोज*

6. *नासिरा शर्मा जिन्दा मुहावरें, पृ0–78*
7. *शोध दिशा (गिरिराज शरण अग्रवाल सं0) अंक–16 सितम्बर–दिसम्बर–2011*
8. *डॉ0 मुदिता चन्द्रा–आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप पृ0–433*
9. *डॉ0 मुदिता चन्द्रा–आधुनिक–हिन्दी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप पृ0 सं0–214 से 282*
10. *महिला उपन्यासकारः–डॉ0 मधु सन्धु*